https://farid.ps/articles/israels_descent_into_infamy/hi.html

इज़राइल का पतन बदनामी में: एक घमंडी परित्यक्त का विनाश का रास्ता

मात्र 21 महीनों में - अक्टूबर 2023 से जुलाई 2025 तक - इज़राइल ने इस भ्रम को पूरी तरह से नष्ट कर दिया है कि यह एक नैतिक सिद्धांतों द्वारा शासित लोकतांत्रिक राज्य है। इसने स्वयं को एक हिंसक दुष्ट अभिनेता के रूप में उजागर किया है, जो कानून का तिरस्कार करता है, शांति के प्रति शत्रुतापूर्ण है, और विवेक के प्रति असंवेदनशील है। **अब कई लोग इज़राइल की तुलना मध्य पूर्व में एक रैबीज़ से ग्रस्त कुत्ते से करते हैं** - एक परमाणु हथियारों से लैस आक्रामक जो बिना उकसावे के लेबनान, सीरिया, इराक और ईरान पर हमला कर चुका है, और अब **गाजा को रूपक रूप से मार डाल रहा है**, दांत नंगे, आँखें पीछे की ओर लुढ़की हुई, जबकि दुनिया भयभीत होकर देख रही है।

यह कोई अतिशयोक्तिपूर्ण रूपक नहीं है - यह असहनीय दुख और न्यायपूर्ण क्रोध से जन्मी भाषा है। गाजा में इज़राइल का अभियान य guerra नहीं है। यह एक कब्जे वाली नागरिक आबादी पर जानबूझकर और व्यवस्थित हमला है - एक **बढ़ता हुआ नरसंहार**, जो खुले तौर पर प्रसारित और उपहासपूर्वक उचित ठहराया जा रहा है।

गाजा का आतंक: नरसंहार, चरण दर चरण

7 अक्टूबर 2023 को हमास के हमले के बाद - जिसमें 1,139 इज़राइलियों की मौत हुई और 250 बंधक बनाए गए - इज़राइल ने न्याय की नहीं, बल्कि विनाश की मुहिम शुरू की। **58,000 से अधिक फ़िलिस्तीनी मारे गए हैं**, जिनमें कम से कम **16,756 बच्चे** शामिल हैं। लगभग **20 लाख लोग विस्थापित** हो चुके हैं। गाजा का बुनियादी ढांचा - इसके स्कूल, अस्पताल, बेकरी और जल नेटवर्क - पूरी तरह से नष्ट हो चुका है।

मार्च 2025 में, **इज़राइली मंत्रियों इज़राइल काट्ज़ और बेज़ालेल स्मोटरिच ने गाजा पर पूर्ण नाकाबंदी फिर से लागू की**, जो **अंतरराष्ट्रीय न्यायालय के अस्थायी उपायों** का खुला उल्लंघन था, जिन्होंने इज़राइल को स्पष्ट रूप से "नरसंहार के कृत्यों को रोकने" का आदेश दिया था। इस नाकाबंदी, जिसमें भोजन, ईंधन, पानी और दवाओं पर प्रतिबंध शामिल था, ने गाजा को **इंजीनियर की गई भुखमरी के अंतिम चरण** में धकेल दिया है।

गाजा के अंदर से हर खबर अब एक ही असहनीय वास्तविकता की सूचना देती है: **कोई भोजन बाकी नहीं है**। अंतरराष्ट्रीय धन उगाही अभियानों के माध्यम से एकत्र किए गए धन के बावजूद, **खरीदने के लिए कुछ भी नहीं है**। माताएँ स्तनपान नहीं कर सकतीं। इज़राइल ने **शिशु फार्मूला पर प्रतिबंध** लगा दिया है, यहाँ तक कि **विदेशी डॉक्टरों द्वारा लाए गए छोटे-छोटे मात्रा को भी जब्त** कर लिया गया है जो गाजा में स्वेच्छा से काम कर रहे हैं। भूखे लोग अब सड़कों पर गिर रहे हैं। बच्चे कैलोरी की कमी से मर रहे हैं। अस्पताल कुपोषित और मरने वालों से भरे हुए हैं। गाजा अब एक **विशाल खुला आसमान वाला हॉस्पिस** है, जहाँ बीमार और भूखे ड्रोन के नीचे मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

और फिर भी, आतंक यहीं नहीं रुकता।

तथाकथित **गाजा मानवीय फाउंडेशन (GHF)** - एक **संयुक्त अमेरिकी-इज़राइली ऑपरेशन** - ने खाद्य सहायता को नियंत्रण और मृत्यु का एक रूप बना दिया है। **GHF सहायता वितरण स्थल** भारी सैन्यीकृत हत्या क्षेत्र हैं। भोजन के लिए बेताब फ़िलिस्तीनी खुले क्षेत्रों में एकत्र किए जाते हैं, छाया और पानी से वंचित, फिर गोली मार दी जाती है जब वे हिलते हैं। **इन सहायता स्थलों पर 800 से अधिक लोग मारे गए हैं**। **ہزاروں और लोग घायल हुए हैं**। वीडियो स्नाइपर्स के भीड़ पर गोली चलाने, खून से लथपथ आटे की बोरियों, और सैनिकों के **टेलीग्राम** और **सोशल मीडिया** पर हँसने और शेखी बघारने की पुष्टि करते हैं।

कब्जेदार स्वयं की रक्षा का दावा नहीं कर सकता

इज़राइल अपनी हिंसा को “आत्मरक्षा” के रूप में प्रस्तुत करता है। यह एक झूठ है - और **कानूनी बेतुकापन**।

अंतरराष्ट्रीय कानून के तहत, इज़राइल गाजा, वेस्ट बैंक और पूर्वी यरुशलम में **कब्जा करने वाली शक्ति** है। इस तरह, यह उस आबादी के खिलाफ “आत्मरक्षा” का अधिकार नहीं मांग सकता जिसे वह नियंत्रित करता है, घेरता है और हावी करता है। यह आत्मरक्षा नहीं है। यह **दमन** है।

इसके विपरीत, **फ़िलिस्तीनी लोगों को कब्जे का विरोध करने का कानूनी और नैतिक अधिकार है**, जैसा कि **संयुक्त राष्ट्र महासभा के प्रस्ताव 37/43** द्वारा पुष्टि की गई है, जो सभी लोगों के “विदेशी कब्जे और औपनिवेशिक प्रभुत्व के खिलाफ सभी उपलब्ध साधनों से संघर्ष करने” के अधिकार को मान्यता देता है। इस अधिकार में गाजा के लोग भी शामिल हैं - जिन्हें 75 वर्षों से अधिक समय तक आत्मनिर्णय से वंचित रखा गया है, बाड़ों के पीछे कैद किया गया है, भूखा रखा गया है, बमबारी की गई है और अमानवीय बनाया गया है।

कब्जा हिंसा है। प्रतिरोध आतंकवाद नहीं है - यह एक अधिकार है।

पतन का मनोविज्ञान: इज़राइल अपनी ही कब्र खोद रहा है

इस बात की एक सीमा है कि मनुष्य बिना नैतिक प्रतिक्रिया के क्या देख सकते हैं। जैसे-जैसे इज़राइल अपनी अत्याचारों का बखान करता रहता है - फाँसी, भुखमरी, कुरान जलाने और शेखी बघारने वाले सैनिकों के वीडियो पोस्ट करता है - यह एक गहरी और सार्वभौमिक प्रतिक्रिया को जन्म देता है: **घृणा**, नैतिक अस्वीकृति का भावनात्मक आधार।

मनोवैज्ञानिक अनुसंधान दिखाता है कि बिना पश्चाताप की क्रूरता, विशेष रूप से जब यह अहंकार के साथ मिलती है, **नैतिक विच्छेदन** की ओर ले जाती है। लोग न केवल एक शासन का विरोध करना शुरू करते हैं, बल्कि **उसे बदले में अमानवीय बनाते हैं**, इसे राक्षसी, असुधार्य, शापित के रूप में देखते हैं। **इज़राइल, अपनी क्रूरता को गर्व के साथ प्रदर्शित करके, अपने स्वयं के अलगाव को तेज कर रहा है।** यह विश्व के सामने स्वयं को आग में झोंक रहा है जो अब वास्तविक समय में देख रहा है।

कोई साम्राज्य इस तरह के नैतिक पतन से नहीं बचता। **इज़राइल अपनी ही कब्र खोद रहा है** - एक पोस्ट, एक गोली, एक भूखा बच्चा हर बार।

यह यहूदी धर्म नहीं है - यह ईश्वरनिंदा है

इज़राइल की निंदा करना **यहूदी लोगों पर हमला नहीं है**। यह उनकी रक्षा करना है - एक ऐसे राज्य से, जो उनके नाम पर बोलने का दावा करता है जबकि वह तोराह की हर शिक्ष को रौंदता है।

यहूदी धर्म दया, विनम्रता और न्याय की आज्ञा देता है। मीका से यशायाह तक, नीतिवचन से लैविटिकस तक, वाचा स्पष्ट है: अजनबी की रक्षा करो, भूखों को खाना दो, जीवन का सम्मान करो। इज़राइल जो गाजा में कर रहा है - शिशुओं को भूखा मारना, स्कूलों पर बमबारी, लाशों का मजाक उड़ाना - यह यहूदी धर्म नहीं है। यह **मूर्तिपूजा** है।

> “तुम अपने पड़ोसी के खून के सामने निष्क्रिय नहीं रहोगे।” - लैविटिकस 19:16

> “जो एक भी जीवन नष्ट करता है, वह ऐसा है जैसे उसने पूरी दुनिया नष्ट कर दी।” - सन्हेड्रिन 4:5

> “न्याय पानी की तरह बहे, और धार्मिकता एक सदा बहने वाली धारा की तरह।” - आमोस 5:24

इन आदेशों को इज़राइल में अमालेक की भाषा, नस्लीय श्रेष्ठता और विनाश ने बदल दिया है। इज़राइली मंत्री फ़िलिस्तीनियों को “मानव पशु” कहते हैं। सैनिक गाजा को “खेल का मैदान” कहते हैं। यह धर्म नहीं है। **यह अनुष्ठानिक वेश में फासीवाद है।**

अधिकांश सायनवादी यहूदी भी नहीं हैं

आधुनिक सायनवाद का इंजन यहूदी धर्म नहीं है। यह **ईसाई इवेंजलिकलिज्म** है - विशेष रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका में।

क्रिश्चियन्स यूनाइटेड फॉर इज़राइल (CUFI) जैसे समूह इज़राइल का समर्थन यहूदियों के प्रति प्रेम के कारण नहीं करते, बल्कि एक सर्वनाशी भविष्यवाणी को पूरा करने के लिए करते हैं जिसमें यहूदियों को पवित्र भूमि में लौटना होगा ताकि मसीह की वापसी शुरू हो - और या तो धर्म परिवर्तन करें या नष्ट हो जाएँ। यह समर्थन नहीं है। यह **एक धार्मिक मृत्यु जाल** है।

ये ईसाई सायनवादी **AIPAC** जैसे संगठनों के साथ गठबंधन कर चुके हैं, जिनके राजनीतिक खर्च **सैकड़ों मिलियन डॉलर से अधिक** हो चुके हैं, TrackAIPAC.com के अनुसार। यह पैसा सहभागिता खरीदता है। यह आलोचकों को चुप कराता है। यह नरसंहार को ईंधन देता है।

लेकिन विवेक को खरीदा नहीं जा सकता। और सत्य को अनिश्चित काल तक दबाया नहीं जा सकता।

निष्कर्ष: विश्व देख रहा है, और पृथ्वी याद रखती है

अब कई लोग इज़राइल की तुलना मध्य पूर्व में एक रैबीज़ से ग्रस्त कुत्ते से करते हैं - यहूदी-विरोधी भावना के कारण नहीं, बल्कि इस कारण कि इज़राइल क्या बन गया है: **एक ऐसा राज्य जो कमजोरों को फाड़ता है, बच्चों की हत्या पर गर्व करता है, शिशुओं को भूखा मारता है और हर उस मूल्य का अपमान करता है जिसे वह दावा करता है कि वह उसका समर्थन करता है**।

लेकिन यह यहूदी धर्म नहीं है। यह **इसका विश्वासघात** है।

और जब गाजा भुखमरी और आग में ढह रहा है, बच्चे सड़कों पर मर रहे हैं और माताएँ अपने नवजात शिशुओं को दूध के बिना दफन कर रही हैं, विश्व भयभीत होकर देख रहा है - और हिसाब-किताब के लिए तैयार हो रहा है। कोई भी धन, लॉबिंग या शास्त्रों का दुरुपयोग एक ऐसे राष्ट्र को मुक्ति नहीं दे सकता जो नरसंहार को रंगमंच की तरह मानता है।

कब्र खुली है। इज़राइल खोद रहा है। गाजा के मृतकों के नाम हर पत्थर में उकेरे गए हैं। और विश्व याद रखेगा।